* कबर परस्ती का रद्द कुरान की रोशनी में *

कबर परस्ती का रद्द कुरान की रोशनी में

http://salfibooks.blogspot.com

कब्र परस्ती का रद्द कुरआन की रौशनी में

✅ दुआ इबादत हैं।

حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ ذَرٍّ، عَنْ يُسَيْعٍ الْحَضْرَمِيِّ، عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ الدُّعَاءُ هُوَ الْعِبَادَةُ قَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ

"हजरत नोमान बिन बशीर रजि. से रिवायत है के रसूलुल्लाह {ﷺ} ने फरमाया : 'दुआ इबादत ही हैं, तुम्हारे रब ने फरमाया :मुझे पुकारो,मै कबूल करूँगा।'

Grade : Sahih (Albani rah.)

Reference : Sunan Abi Dawud 1479



٨- كتاب الوتر | 174 | آداب دعا کا بیان

(المعجم ٢٣) - **باب الدُّعَاءِ**

(التحفة ٣٥٩)

باب:۲۳-(آداب) دعا

١٤٧٩- حَدَّثَنا حَفْصُ بنُ عُمَرَ: حَدَّثَنا شُعْبَةُ عنْ مَنْصُورٍ، عنْ ذَرٍّ، عن يُسَيْعٍ الْحَضْرَمِيِّ، عنِ النُّعْمَانِ بنِ بَشِيرٍ عنِ النَّبِيِّ ﷺ قالَ: «الدُّعَاءُ هيَ الْعِبَادَةُ ﴿وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِىٓ أَسْتَجِبْ لَكُمْ﴾» [غافر: ٦٠].

۱۴۷۹-حضرت نعمان بن بشیر ؓ سے روایت ہے کہ نبی ﷺ نے فرمایا: ”دعا عبادت ہی ہے۔ تمہارے رب نے فرمایا ہے: مجھے پکارو، میں قبول کروں گا۔“

"हजरत नोमान बिन बशीर रजि. इर्शाद नक़ल करते है के दुआ ही तो इबादत हैं फिर आप {ﷺ} ने ये आयत पढ़ी,

وقالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ

"और तुम्हारा परवरदिगार इरशाद फ़रमाता है कि तुम मुझसे दुआएं माँगों मैं तुम्हारी (दुआ) क़ुबूल करूँगा जो लोग हमारी इबादत से अकड़ते हैं वह अनक़रीब ही ज़लील व ख्वार हो कर यक़ीनन जहन्नुम दाखिल होंगे"

Grade : Hasan Sahih (Tirmiji rah.)

Reference : Jami` at-Tirmidhi 3372



اَبْوَابُ الدَّعْوَاتِ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

3372۔ حدثنا احمد بن منيع نا مروان بن معاوية عن الاعمش عن زر عَنْ يُسَيْعٍ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيْرٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ الدُّعَاءُ هُوَالْعِبَادَةُ ثُمَّ قَرَأَ وَ قَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْ اَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دَاخِرِيْنَ

دعاؤں کے متعلق رسول اللہ ﷺ سے منقول احادیث کے ابواب

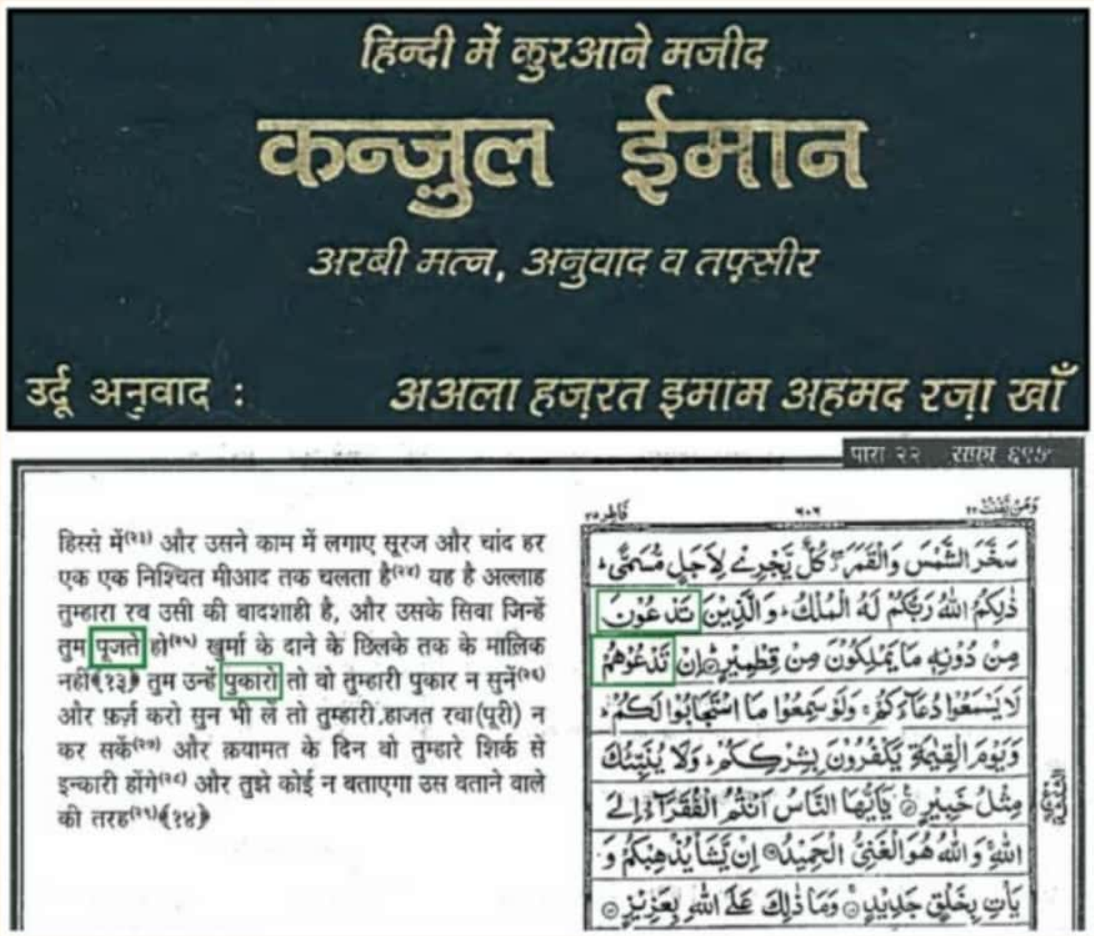
بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

3372۔ حضرت نعمان بن بشیرؓ رسول اللہ ﷺ کا ارشاد نقل کرتے ہیں کہ دعا ہی تو عبادت ہے پھر آپ ﷺ نے یہ آیت پڑھی "وقال ربکم ادعونی"......الایۃ (یعنی تمہارا رب کہتا ہے کہ مجھ سے دعا کرو میں تمہاری دعا قبول کروں۔ جو لوگ میری عبادت سے تکبر کرتے ہیں وہ عنقریب ذلیل ہو کر جہنم میں داخل ہوں گے۔

یہ حدیث حسن صحیح ہے۔ منصور اور اعمش اسے زر سے نقل کرتے ہیں۔ ہم اسے صرف زر ہی کی روایت سے جانتے ہیں۔

✅ पुकारना भी दुआ हैं और दुआ, इबादत हैं।

☑इन सहीह अहादीस से पता चलता हैं की दुआ, इबादत हैं। इसी तरह पुकारना भी दुआ हैं और दुआ, इबादत हैं।
एक ऐतराज किया जाता हैं की दुआ इबादत तो हैं लेकिन "पुकारना", दुआ या इबादत नहीं हैं।
〰️इस गलत फहमी का निवारण इस तरह किया जा सकता हैं की कुरआन में "पुकारना" के लिए "تَدْعُو" शब्द आया हैं जिसका तर्जुमा हजरत मौलाना अहमद रजा ख़ाँ बरेलवी द्वारा किये कुरआने मजीद के तर्जुमा : "📚कन्जुल ईमान" के हिंदी अनुवाद में सूरह फातिर,आयत 13 (सफा-695) में "पूजना (इबादत)" किया गया हैं और यही शब्द "تَدْعُو" का तर्जुमा सुरः फातिर ,आयत 14 में "पुकारना" किया हैं।


हिन्दी में कुरआने मजीद
कन्जुल ईमान
अरबी मत्न, अनुवाद व तफ़्सीर
उर्दू अनुवाद : अअला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ

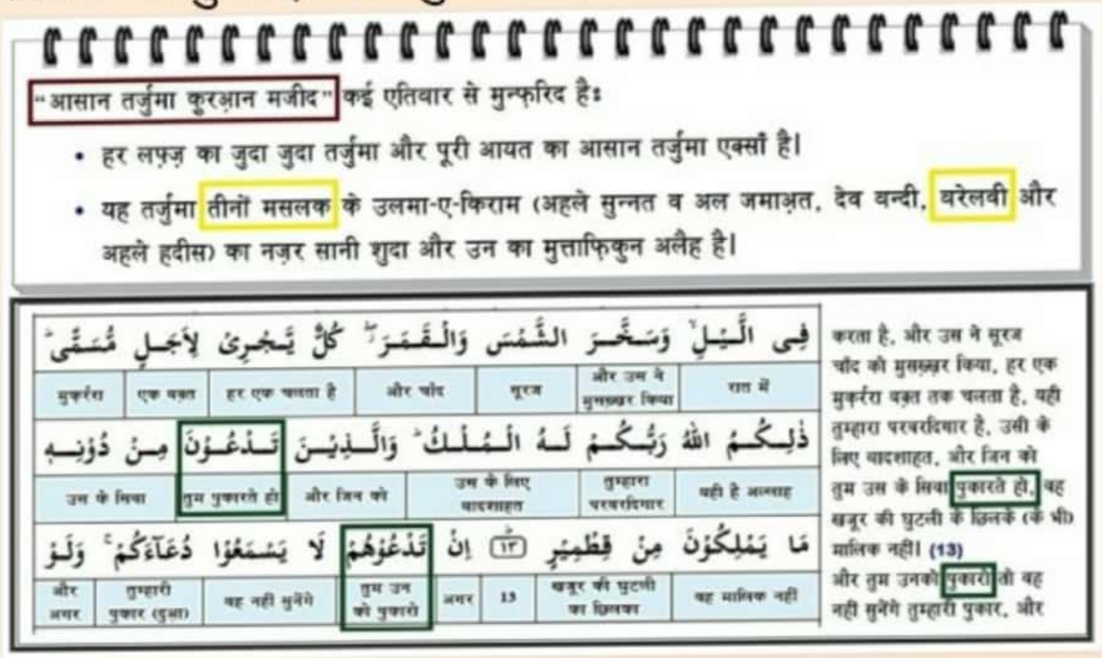
पारा २२ सफ़ा ६९५

हिस्से में[२१] और उसने काम में लगाए सूरज और चांद हर एक एक निश्चित मीआद तक चलता है[२४] यह है अल्लाह तुम्हारा रब उसी की बादशाही है, और उसके सिवा जिन्हें तुम पूजते हो[२५] खुर्मा के दाने के छिलके तक के मालिक नहीं(१३) तुम उन्हें पुकारो तो वो तुम्हारी पुकार न सुनें[२६] और फ़र्ज़ करो सुन भी लें तो तुम्हारी हाजत रवा(पूरी) न कर सकें[२७] और क़यामत के दिन वो तुम्हारे शिर्क से इन्कारी होंगे[२८] और तुझे कोई न बताएगा उस बताने वाले की तरह[२९](१४)

سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى
ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ اِنْ تَدْعُوْهُمْ
لَا يَسْمَعُوْا دُعَآءَكُمْ وَلَوْ سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ
وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ وَلَا يُنَبِّئُكَ
مِثْلُ خَبِيْرٍ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى
اللّٰهِ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَ
يَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ

〰️इसके अलावा तीनो मसलक के उलमा-ए-किराम (देवबंदी,बरेलवी और अहले हदीस) का नजर सानी शुदा और उन का मुत्ताफिकुन अल्लैह "📚आसान तर्जुमा कुरआन मजीद" किताब के सफा-437 में सुरः फातिर,आयत 13-14 में भी

किताब के सफा-437 में सुरः फातिर,आयत 13-14 में भी "تَدْعُو" का तर्जुमा "पुकारना" लिया गया हैं। इससे साबित होता हैं पुकारना भी दुआ हैं और दुआ ही इबादत हैं।



"आसान तर्जुमा कुरआन मजीद" कई एतिबार से मुन्फ़रिद है:

- हर लफ़्ज़ का जुदा जुदा तर्जुमा और पूरी आयत का आसान तर्जुमा एक्साँ है।
- यह तर्जुमा तीनों मसलक के उलमा-ए-किराम (अहले सुन्नत व अल जमाअत, देव बन्दी, बरेलवी और अहले हदीस) का नज़र सानी शुदा और उन का मुत्ताफ़िकुन अलैह है।

فِى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَّجْرِىْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى

मुकर्रर	एक वक़्त	हर एक चलता है	और चांद	सूरज	और उस ने मुसख़्ख़र किया	रात में

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ

उस के सिवा	तुम पुकारते हो	और जिन को	उस के लिए बादशाहत	तुम्हारा परवरदिगार	यही है अल्लाह

مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ﴿١٣﴾ اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا يَسْمَعُوْا دُعَآءَكُمْ وَلَوْ

और अगर	तुम्हारी पुकार (दुआ)	वह नहीं सुनेंगे	तुम उन को पुकारो	अगर	13	खजूर की घुटली का छिलका	वह मालिक नहीं

करता है, और उस ने सूरज चाँद को मुसख़्ख़र किया, हर एक मुक़र्ररा वक़्त तक चलता है, यही तुम्हारा परवरदिगार है, उसी के लिए बादशाहत, और जिन को तुम उस के सिवा पुकारते हो, वह खजूर की घुटली के छिलके (के भी) मालिक नहीं। (13) और तुम उनको पुकारो तो वह नहीं सुनेंगे तुम्हारी पुकार, और

ठ ठ ठ ठ ठ ठ ठ ठ ठ

✔ गेरूल्लाह को पुकारना शिर्क और कबीरा गुनाह हैं।

🔻🔻🔻

☑जब पुकारना इबादत हैं और इबादत सिर्फ अल्लाह ही की जानी चाहिए। तो फिर किसी गैर को पुकारना उसकी इबादत करना यानी मअबूद बनाना हैं जो शिर्क हैं और नाकाबिले माफ़ी जुर्म हैं।

〰पवित्र कुरआन की प्रथम सुरः, Al-Faaitha में अल्लाह तआला फरमाते हैं,

"إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ"

"हम तेरी ही इबादत करते हैं, और तुझ ही से मदद मांगते है।"

✨Al-Faaitha (1 :5)

स्पष्ट हैं की दुआ बड़ी अहम किस्म की इबादत हैं और इबादत सिर्फ अल्लाह का हक़ हैं। यानी अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं।

हम जानते हैं की नमाज अल्लाह की इबादत हैं, इसलिए नमाज किसी रसूल या वली के लिए पढ़नी जाइज नहीं, इसी तरह अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी नबी या वली से दुआ मांगी जाये तो यह भी जायज न होगी। वोह मुसलमान जो या रसूलुल्लाह,या गौस पाक और फ़लाँ मदद करो,फ़रियादरसी करो, कहते हैं तो यकींनन यह दुआ ही हैं और अल्लाह तआला के अतिरिक्त दुसरो की इबादत भी। अल्लाह के अतिरिक्त दुसरो से दुआ माँगना शिर्क हैं जिसे अल्लाह तआला बिना तौबा के बिल्कुल माफ़ नहीं करेगा।

ʊ ʊ ʊ ʊ ʊ ʊ ʊ ʊ ʊ

✔ कुरआन शरीफ से दलील

▼▼▼

{قُلْ إِنَّمَا أَدْعُو رَبِّي وَلاَ أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا}

"(आप ﷺ) कह दीजिये की मै तो केवल अपने रब की इबादत करता हु और उस के साथ किसी को साझीदार नहीं बनाता"

{قُلْ إِنِّي لاَ أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلاَ رَشَدًا}

"कह दीजिये की मुझे तुम्हारे लिए किसी फायदे-नुकसान का हक़ नहीं"

✨Al-Jinn (72 :20-21)

يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوا لَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَنْ يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوِ اجْتَمَعُوا لَهُ ۖ وَإِنْ يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَا يَسْتَنْقِذُوهُ مِنْهُ ۚ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ

"हे लोगो! एक मिसाल दी जा रही हैं, जरा ध्यान से सुनो, अल्लाह के सिवाय जिन-जिन को पुकारते रहे वे एक मक्खी तो पैदा नहीं कर सकते अगर सारे के सारे जमा हो जाएं, बल्कि अगर मक्खी उन से कोई चीज ले भागे तो यह उसे भी छीन नहीं सकते। बड़ा कमजोर हैं मांगने वाला और बहुत कमजोर हैं जिस से माँगा जा रहा हैं।"

कमजोर हैं मांगने वाला और बहुत कमजोर हैं जिस से माँगा जा रहा हैं।"

✨Al-Hajj (22 :73)

يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُسَمًّى ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِنْ قِطْمِيرٍ

"वह रात को दिन में और दिन को रात में दाखिल कराता हैं, और सूरज और चाँद को उसी ने काम में लगा दिया हैं, हर एक मुकर्रर मुद्दत तक चल रहे हैं। यही हैं अल्लाह तुम सबका रब, इसी की सल्तनत हैं और जिन्हें तुम उस में सिवाय पुकार रहे हो वह तो खजूर की गुठली के छिलके के भी मालिक नहीं।"

إِنْ تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ ۚ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيرٍ

"अगर तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार सुनते ही नहीं और अगर (मान लिया की) सुन भी ले तो कुबूल नहीं करेंगे,बल्कि कयामत के दिन तुम्हारे शिर्क का साफ़ इनकार कर देंगे और आप को कोई भी (अल्लाह तआला) जैसा जानकार खबरे न देगा"

✨Faatir (35 :13-14)

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدِ افْتَرَىٰ إِثْمًا عَظِيمًا

"बेशक अल्लाह (उस को) माफ़ नहीं करता जो उस का शरीक ठहराए, और उस के सिवा जिसे चाहे माफ़ कर दे,और जो अल्लाह के साथ शिर्क करे उस ने अल्लाह पर भारी आरोप घड़ा"

✨An-Nisaa (4 :48)

☑अल्लाह तआला के उपरोक्त फरमान के मुताबिक़ अल्लाह को छोड़कर दुसरो से मदद तलब करना जायज नहीं। बात एकदम

☑अल्लाह तआला के उपरोक्त फरमान के मुताबिक़ अल्लाह को छोड़कर दुसरो से मदद तलब करना जायज नहीं। बात एकदम साफ़ हैं की किसी व्यक्ति द्वारा यह कहना की या रसूलुल्लाह मदद कर, या अली मदद इत्यादि तो यह कुरआन और हदीस की रौशनी में कत्तई नाजाइज़,शिर्क और गुनाहे कबीरा हैं, जिसे बगैर सच्ची और पक्की तौबा के अल्लाह तआला कभी माफ़ नहीं फरमाएगा।

➰➰➰➰➰➰➰➰➰

✔️हनफ़ी बरेलवी उलेमा का एतराज की "इन कुर्आनी आयते को मुसलमानो पर फिट नहीं किया जा सकता"
का जवाब कुरआन और हदीस की रौशनी में

🔻🔻🔻

☑लेकिन कुरआन की ये आयते करीमा हनफ़ी बरेलवी हजरात को बतौर दलील पेश की जाती हैं तो इस दलील को बरेलवी उलेमा यह बोलकर रद्द कर देते हैं की अम्बिया किराम और औलिया अल्लाह मिन्दुनिल्लाह (مِنْ دُونِ اللّٰهِ) में दाखिल नहीं हैं , ये कुर्आनी आयते सिर्फ और सिर्फ बुतो की इबादत की मुमानियत (मनाही) और मक्का के मुशरिकों के लिए अल्लाह ने नाजिल फ़रमाई हैं ,औलिया अल्लाह से इसका लेना देना नहीं हैं और इन आयते करीमा को मुसलमानो के ऊपर फिट नहीं किया जा सकता और दलील "तफ़सीर इब्ने कसीर" की तफ़सीर से देते हैं।

〰️इसका जवाब इस तरह हैं:-
सुर: हज्ज ,आयत 73 और इसी तरह से गेरुल्लाह को पुकारने की मनाही जिन-जिन आयतो में हैं जैसे सुर: :- निसा (4 :117), अनआम (6 :71), आराफ़ (7 :37), रअद (13 :14), नहल (16 :20), हज्ज (22 :12), अहकाफ (46 :5) आदि में "مِنْ دُونِ اللّٰهِ" आया हैं जिसका अर्थ "अल्लाह को सिवा" होता हैं।

〰️नूह अल्लैहिस्सलाम ने जब अपनी क़ौम को तौहीद की दवअत दी,
अल्फ़ाज़ कुरआन शरीफ के हैं:-
{أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ وَأَطِيعُونِ}
"कि तुम लोग अल्लाह की इबादत करो और उसी से डरो और मेरी इताअत करो"
✨Nooh (71 :3)

तो उनकी कौम ने उन्हें जवाब दिया,
अल्फ़ाज़ कुरआन शरीफ के हैं:-
وَقَالُوا لاَ تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلاَ تَذَرُنَّ وَدًّا وَلاَ سُوَاعًا وَلاَ يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا
"और (उलटे) कहने लगे कि आपने माबूदों को हरगिज़ न छोड़ना और न वद को और सुआ को और न यगूस और यऊक़ व नस्र को छोड़ना"
✨Nooh (71 :23)

🔅"अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि.फरमाते हैं की ये कौमे नूह के नेक मुर्दो के नाम हैं जब वो मर गए तो शैतान ने उनकी कौम के दिल में ख्याल डाला की जिन मुक़ामात पर ये औलियाअल्लाह बैठा करते थे वहाँ उनके बुत बना कर खड़े कर दो (ताकि उनकी याद ताजा रहे,वो अबतक उनको पूजते न थे) जब ये यादगार बनाने वाले इंतेक़ाल कर गए तो बाद वालो ने उन बुजुर्गो के बुतों की इबादत शुरू कर दी। बुत हजरत नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम में पूजे जाते थे बाद में वही अरब में पूजे (इबादत) जाने लगे।'
📚Reference : Sahih Al-Bukhari 4920

🔅"अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रजि. ने लात और ऊज्जा

"अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रजि. ने लात और ऊज्जा (मुशरिकीने मक्का के मअबूद) के बारे में फरमाया की लात एक आदमी था जो हाजियों के लिए सत्तू घोलता था"

Reference : Sahih Al-Bukhari

इन हवालों से बात वाजेह हो जाती हैं की मुशरिक लोग पहले के जमाने से ही नेक बुजुर्ग हजरात और औलिया अल्लाह की इबादत करते हुए आ रहे है। फर्क सिर्फ इतना हैं की मुशरिकीने मक्का बुतों की इबादत करता था आज के मुशरिक नेक लोगो और औलिया अल्लाह की कब्रो को पुख्ता करके और इमारत बना कर उनसे मदद तलब कर रहा हैं जो की सरासर उनको मअबूद बना कर उनकी इबादत करना ही हैं।

और ये काम भी अल्लाह के रसूल {ﷺ} की नाफ़रमानी करके हो रहा हैं क्योंकि हदीस-ए-पाक में आता हैं :

جَابِرٍ، قَالَ نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أَنْ يُجَصَّصَ الْقَبْرُ وَأَنْ يُقْعَدَ عَلَيْهِ وَأَنْ يُبْنَى عَلَيْهِ

"हजरत जाबिर रजि. से रिवायत है की रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पुख्ता कब्रे बनाने और और उनपर बैठने और इमारत तामीर करने से मना फ़र्माया है"

كتاب الجنائز — ٨١٥ — صحیح مسلم شریف مترجم اردو (جلد اوّل)

بَابُ النَّهْيِ عَنْ تَجْصِيصِ الْقَبْرِ وَالْبِنَاءِ عَلَيْهِ

2245 - وَحَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ عَنْ جَابِرٍ قَالَ نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُجَصَّصَ الْقَبْرُ وَأَنْ يُقْعَدَ عَلَيْهِ وَأَنْ يُبْنَى عَلَيْهِ •

باب: پختہ قبر بنانے اور قبر پر عمارت تعمیر کرنے کی ممانعت

2245 - ابو بکر بن ابی شیبہ، حفص بن غیاث، ابن جریج، ابوالزبیرؓ، حضرت جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے قبروں کے پختہ بنانے اور اس پر بیٹھنے اور ان پر تعمیرات کرنے سے منع فرمایا ہے۔

Reference : Sahih Muslim 2245 (970)

~~इस तरह से मौजूदा जमाने में कब्रो को बुत बना लिया गया हैं क्योंकि कोई भी पत्थर बुत तब बनता हैं जब लोगो की आस्था उससे जुड़ जाती लोग उस पत्थर को शक्तिशाली मानते हैं और मुसीबत व परेशानियो में अपनी हाजतरवाई के लिए उसे पुकारते हैं और यही हाल आजकल औलिया अल्लाह के मजारो का हैं।

और अल्लाह को छोड़कर अल्लाह के नेक बन्दों की इबादत करने वालो के लिए ही अल्लाह ने कुरआन में फरमाया:-

إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ أَمْثَالُكُمْ ۖ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ

"बेशक तुम अल्लाह को छोड़कर जिन को पुकारते हो (इबादत करते) हो वह भी तुम ही जैसे बन्दे हैं, तो तुम उनको पुकारो तो चाहिए था की वे तुम्हे जवाब दे अगर तुम सच्चे हो।"

Al-A'raaf (7 :194)

~~अल्लाह तआला ने ईसा अलैहिस्सलाम और उनकी उनकी वालिदा मोहतरमा मरियम अलैहिस्सलाम को मिन्दुनिल्लाह (अल्लाह के अलावा/सिवा) में शामिल किया :-

وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ أَأَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَٰهَيْنِ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ ۚ إِنْ كُنْتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ ۚ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ

"और (वह वक़्त भी याद करो) जब अल्लाह तआला कहेगा की ईसा इब्ने मरियम,क्या तुम ने उन लोगो से कह दिया था की मुझ को और मेरी माँ को अल्लाह के सिवाय माबूद बना लेना? (ईसा) कहेंगे की मै तो तुझे मुनज्जह (पाक) समझता हु, मुझ को किस तरह से शोभा (जेब) देती की मै ऐसी बात कहता जिस के कहने क मुझे कोई हक़ नहीं, अगर मेने कहा होगा तो तुझ को उस का

तरह से शोभा (जेब) देती की मै ऐसी बात कहता जिस के कहने क मुझे कोई हक़ नहीं, अगर मेने कहा होगा तो तुझ को उस का इल्म होगा,तू तो मेरे दिल की बात जानता हैं ,मै तेरे जी में जो कुछ हैं उस को नहीं जानता,सिर्फ तू ही गैबो का जानकार हैं।"

Al-Maaida (5 :116)

और जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ)! क्या तू ने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के सिवा दो माबूद ठहरा लो, उस ने कहा तू पाक है, मेरे लिए (रवा) नहीं कि मैं (ऐसी बात) कहूँ जिस का मुझे हक नहीं। अगर मैं ने यह कहा होता तो तुझे ज़रूर उस का इल्म होता, तू जानता है जो मेरे दिल में है और मैं नहीं जानता जो तेरे दिल में है। बेशक तू छुपी बातों को जानने वाला है। (116)

मैं ने उन्हें नहीं कहा मगर सिर्फ वह जिस का तू ने मुझे हुक्म दिया कि तुम अल्लाह की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा रब है, और मैं जब तक उन में रहा उन पर ख़बरदार (बाख़बर) था। फिर जब तू ने मुझे उठा लिया तो उन पर तू निगरान था और तू हर शै से बाख़बर है। (117)

وَإِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِي

मुझे ठहरा लो	लोगों से	तू ने कहा	क्या तू	इब्ने मरयम (अ)	ऐ ईसा (अ)	अल्लाह ने कहा	और जब

وَاُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ

मैं कहूँ	कि	मेरे लिए	है	नहीं	तू पाक है	उस ने कहा	अल्लाह के सिवा	से	दो माबूद	और मेरी माँ

مَا لَيْسَ لِيْ ۤ بِحَقٍّ ڲ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ۭ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ

मेरा दिल	में	जो	तू जानता है	तो तुझे ज़रूर उस का इल्म होता	मैं ने यह कहा होता	अगर	हक़	मेरे लिए	नहीं

وَلَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝١١٦ مَا قُلْتُ لَهُمْ

उन्हें	मैं ने नहीं कहा	116	छुपी बातें	जानने वाला	तू	बेशक तू	तेरे दिल में	जो	और मैं नहीं जानता

اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِيْ بِهٖٓ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ

उन पर	और मैं था	और तुम्हारा रब	मेरा रब	तुम अल्लाह की इबादत करो	कि	उस का	जो तू ने मुझे हुक्म दिया	मगर

شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ۭ

उन पर	निगरान	तू	तो था	तू ने मुझे उठा लिया	फिर जब	उन में	जब तक मैं रहा	ख़बरदार

وَاَنْتَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝١١٧

117	बाख़बर	हर शै	पर-से	और तू

1 यह सवाल क़यामत के दिन होगा, मक़सद इस से अल्लाह को छोड़ कर किसी दूसरे को माबूद बनाने वालों को बाखबर करना है कि जिन को तुम माबूद और परेशानी दूर करने वाला समझते थे वह तो ख़ुद अल्लाह के दरबार में उत्तरदायी (जवाबदेह) हैं।

दूसरी बात यह मालूम हुई कि इसाईयों ने हजरत मसीह के साथ हजरत मरियम को माबूद बनाया है !

तीसरी बात यह मालूम हुई कि अल्लाह के सिवाय माबूद वही नही जिन्हें मूर्तिपूजकों ने पत्थर या लकड़ियों का कोई रूप बनाकर उनकी इबादत की, जिस तरह आजकल क़ब्र के पूजारी आलिम अपनी जनता को यह बताकर धोखा दे रहे है, बल्कि अल्लाह के वे बंदे भी अल्लाह के सिवाय माबूद की परिधि (दायरे) में आते है जिनकी लोगों ने किसी भी रूप से इबादत की, जैसे हजरत ईसा और मरियम की इसाईयों ने की।

जब अल्लाह के नबी ईसा अलैहिस्सलाम और उनकी वालिदा मरियम अल्लैहिस्सलाम मिन्दुनिल्लाह {مِنْ دُونِ اللّٰهِ} में दाखिल हैं तो यह दावा गलत हैं की अम्बिया और औलिया मिन्दुनिल्लाह में नहीं मिन्दुनिल्लाह में सिर्फ बुत शामिल हैं।

〰मजीद देखे एक और आयत में अल्लाह ने उलमा,दुर्वेशो और ईसा इब्ने मरियम अलैहिस्सलाम को मिन्दुनिल्लाह में शामिल किया हैं :

اتَّخَذُوا أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَالْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَمَا أُمِرُوا إِلاَّ لِيَعْبُدُوا إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ لاَ إِلَٰهَ إِلاَّ هُوَ ۚ سُبْحَانَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ

"उन लोगो ने अल्लाह को छोड़कर अपने आलिमो और दरवेशों को रब बनाया हैं, मरियम के बेटे मसीह (ईसा) को,अगरचे कि उन्हें एक अकेले अल्लाह ही की इबादत का हुक्म दिया गया था,जिसके सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं,वह उनके शिर्क करने से पाक हैं।"

✨At-Tawba (9 :31)

〰जब उलमा (आलिम), दुर्वेशों और ईसा अलै. मिन्दुनिल्लाह में दाखिल हैं तो इससे पता चला की मिन्दुनिल्लाह से सिर्फ बुत मुराद नहीं, बल्कि अल्लाह तआला के अलावा हर वो मखलूक जिसको अल्लाह के अलावा पुकारा/इबादत की जाएं, भले ही वो बुरे कामो से मुकम्मिल तौर पर बरी हो जैसे अम्बिया,फ़रिश्ते, और औलिया अल्लाह जैसी बेहतरीन हस्तियाँ भी मिन्दुनिल्लाह में शामिल हैं। इन जलीलुलकद्र हस्तियों ने खुसूसन अम्बिया अलैहिस्सलाम ने तो अपनी तमाम कोशिशे इस बात को समझाने और मनवाने में लगा दी की अल्लाह एक हैं और इबादत का हक़ सिर्फ उसी को पहुचता हैं।

أَلاَ لِلَّهِ الدِّينُ الْخَالِصُ ۚ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلاَّ لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۗ إِنَّ اللَّهَ لاَ يَهْدِي مَنْ هُوَ كَاذِبٌ كَفَّارٌ

"सुनो! अल्लाह (तआला) ही के लिए खालिस इबादत करना हैं

"सुनो! अल्लाह (तआला) ही के लिए खालिस इबादत करना हैं और जिन लोगों ने उस के सिवाय औलिया बना रखे हैं (और कहते हैं) की हम इनकी इबादत केवल इसलिए करते हैं की यह (बुजुर्ग) अल्लाह के करीब हम को पंहुचा दे,ये लोग जिस बारे में इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं उसका (इंसाफ वाला) फैसला अल्लाह (तआला) खुद कर देगा, झूठे और नाशुक्रे (लोगों) को अल्लाह (तआला) रास्ता नही दिखता।"

✨Az-Zumar (39 :3)

"और उन में से ज्यादातर लोग अल्लाह पर ईमान रखने के बावजूद भी मुशरिक ही हैं "

✨Yusuf (12:106)

〰️इन तमाम दलीलो से यह साबित होता हैं की ये कुरआन की बाज आयते गेरुल्लाह को पुकारने के रद्द में उतरी हैं और गेरुल्लाह में तमाम मख्लूक़ शामिल हैं जिन्हें अल्लाह के सिवा पुकारा जाएँ जिनमे तमाम अम्बिया और औलिया किराम व नेक लोग शामिल हैं इसलिए इन आयतो को गेरूल्लाह को पुकार कर शिर्क करने वाले मुसलमानों पर फिट किया जा सकता हैं।

ʊ ʊ ʊ ʊ ʊ ʊ ʊ ʊ ʊ

✔️"तफ़सीर इब्ने कसीर" से दलील

🔻🔻🔻

☑️और इस की ताईद के लिए इस्लामी दुनिया में कुरआन की सबसे मोतबर तफ़्सीर लिखने वाले हाफिज इस्माइल इब्ने कसीर रह. की किताब "तफ़्सीर इब्ने कसीर" जिसपर सभी मसलक के उलेमा मुत्तफ़िक हैं उसी किताब से दलील पर गौर फरमाए:-
इस किताब के सफा 748 में सुरः फातिर,आयत 13-14 की तफ़्सीर में इब्ने कसीर रह. लिखते हैं

"......अल्लाह...ही दरअसल लायके इबादत हैं और वही सब का पालने वाला हैं। इस के सिवा कोई भी लायके इबादत नहीं। जिन बुतों को और अल्लाह के सिवा जिन-जिन को लोग पुकारते हैं ख्वाह वो फ़रिश्ते ही क्यों न हो और अल्लाह के पास बड़े दर्जे रखने वाले ही क्यों न हो लेकिन सब के सब इस के सामने महज मजबूर और बिलकुल बेबस हैं। खजूर की गुठली के ऊपर के बारीक छिलके जितनी चीज का भी इन्हें इख़्तियार नहीं। आसमान व जमीन के हकीर से हकीर चीज के भी वो मालिक नहीं जिन जिन को तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो वो तुम्हारी आवाज सुनते ही नहीं। तुम्हारे ये बुत वगेरह बेजान चीजे कान वाली नहीं जो सुन सके। बेजान चीजे भी कही किसी की सुन सकती हैं? और बालफ्ज तुम्हारी पुकार सुन ले तो भी चूँकि इन के कब्जे में कोई चीज नहीं इस लिये वो तुम्हारी हाजत पूरी कर नहीं सकते। कयामत के दिन तुम्हारे इस शिर्क से वो इनकारी हो जाएंगे। तुम से वो बेजार नजर आएंगे।"

📚Reference : Tafsir Ibn Kathir, Tafsir Sura Faatir (35 :13-14), Page Number 748



بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

یُوۡلِجُ الَّیۡلَ فِی النَّہَارِ وَ یُوۡلِجُ النَّہَارَ فِی الَّیۡلِ وَ سَخَّرَ الشَّمۡسَ
وَ الۡقَمَرَ ۫ۖ کُلٌّ یَّجۡرِیۡ لِاَجَلٍ مُّسَمًّی ؕ ذٰلِکُمُ اللّٰہُ رَبُّکُمۡ لَہُ الۡمُلۡکُ ؕ
وَ الَّذِیۡنَ تَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِہٖ مَا یَمۡلِکُوۡنَ مِنۡ قِطۡمِیۡرٍ ﴿ؕ۱۳﴾ اِنۡ
تَدۡعُوۡہُمۡ لَا یَسۡمَعُوۡا دُعَآءَکُمۡ ۚ وَ لَوۡ سَمِعُوۡا مَا اسۡتَجَابُوۡا لَکُمۡ ؕ
وَ یَوۡمَ الۡقِیٰمَۃِ یَکۡفُرُوۡنَ بِشِرۡکِکُمۡ ؕ وَ لَا یُنَبِّئُکَ مِثۡلُ خَبِیۡرٍ ﴿۱۴﴾ ع

رات کو دن میں اور دن کو رات میں داخل کرتا ہے۔ آفتاب و ماہتاب کو اسی نے کام میں لگا دیا ہے۔ ہر ایک میعادِ معین پر چل رہا ہے یہی ہے اللہ تم سب کا پالنے والا۔ اسی کی سلطنت ہے۔ جنہیں تم اس کے سوا پکار رہے ہو وہ تو کھجور کی گٹھلی کے چھلکے کے بھی مالک نہیں ○ اگر تم انہیں پکارو تو وہ تمہاری پکار سنتے ہی نہیں اور اگر بالفرض سن بھی لیں تو قبول نہیں کر سکتے بلکہ قیامت کے دن تمہارے اس شرک کا صاف انکار کر جائیں گے۔ تجھے کوئی بھی حق تعالیٰ خبردار جیسی خبریں نہ دے گا ○

(آیت: ۱۳-۱۴) اللہ تعالیٰ اپنی قدرت کاملہ کا بیان فرما رہا ہے کہ اس نے رات کو اندھیرے والی اور دن کو روشنی والا بنایا ہے۔ کبھی کی راتیں بڑی کبھی کے دن بڑے۔ کبھی دونوں یکساں۔ کبھی جاڑے ہیں' کبھی گرمیاں ہیں۔ اسی نے سورج اور چاند کو تھمے ہوئے اور چلتے پھرتے ستاروں کو مطیع کر رکھا ہے۔ مقدار معین پر اللہ کی طرف سے مقرر شدہ چال پر چلتے رہتے ہیں۔ پوری قدرتوں والے اور کامل علم والے اللہ نے یہ نظام قائم کر رکھا ہے جو برابر چل رہا ہے۔ اور وقت مقررہ یعنی قیامت تک یونہی جاری رہے گا۔ جس اللہ نے یہ سب کیا ہے' وہی دراصل لائق عبادت ہے اور وہی سب کا پالنے والا ہے۔ اس کے سوا کوئی بھی لائق عبادت نہیں۔ جن بتوں کو اور اللہ کے سوا جن جن کو لوگ پکارتے ہیں خواہ وہ فرشتے ہی کیوں نہ ہوں اور اللہ کے پاس بڑے درجے رکھنے والے ہی کیوں نہ ہوں لیکن سب کے سب اس کے سامنے محض مجبور اور بالکل بے بس ہیں۔ کھجور کی گٹھلی کے اوپر کے باریک چھلکے جیسی چیز کا بھی انہیں اختیار نہیں۔ آسمان و زمین کی حقیر سے حقیر چیز کے بھی وہ مالک نہیں' جن جن کو تم اللہ کے سوا پکارتے ہو وہ تمہاری آواز سنتے ہی نہیں۔ تمہارے یہ بت وغیرہ بے جان چیزیں کان والی نہیں جو سن سکیں۔ بے جان چیزیں بھی کہیں کسی کی سن سکتی ہیں۔ اور بالفرض تمہاری پکار سن بھی لیں تو چونکہ ان کے قبضے میں کوئی چیز نہیں' اس لئے وہ تمہاری حاجت برآری کر نہیں سکتے۔ قیامت کے دن تمہارے اس شرک سے وہ انکاری ہو جائیں گے۔ تم سے بیزار نظر آئیں گے۔

جیسے فرمایا وَمَنۡ اَضَلُّ مِمَّنۡ یَّدۡعُوۡا مِنۡ دُوۡنِ اللّٰہِ الخ یعنی اس سے زیادہ گمراہ کون ہوگا جو اللہ کے سوا ایسوں کو پکارتا ہے جو قیامت تک ان کی پکار کو نہ قبول کر سکیں بلکہ ان کی دعا سے وہ محض بے خبر اور غافل ہیں اور میدان محشر میں وہ ان کے دشمن ہو جائیں گے اور ان کی عبادتوں سے منکر ہو جائیں گے۔ اور آیت میں ہے وَاتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِ اللّٰہِ اٰلِہَۃً لِّیَکُوۡنُوۡا لَہُمۡ عِزًّا الخ یعنی اللہ کے سوا اور معبود بنا لئے ہیں تاکہ وہ ان کے لئے باعث عزت بنیں لیکن ایسا نہیں ہو سکے گا بلکہ وہ ان کی عبادتوں سے بھی منکر ہو جائیں گے اور ان کے مخالف اور دشمن بن جائیں گے۔ بھلا بتاؤ تو اللہ جیسی سچی خبریں اور کون دے سکتا ہے؟ جو اس نے فرمایا' وہ یقیناً ہو کر ہی رہے گا۔ جو کچھ ہونے والا ہے' اس سے اللہ تعالیٰ پورا خبردار ہے۔ اس جیسی خبر کوئی اور نہیں دے سکتا۔

ত ত ত ত ত ত ত ত ত

✓ अन्त में कुछ मन की बात

मेरे पास "तफ़सीर इब्ने कसीर" अलग-अलग 2 किताबे PDF में मौजूद हैं इसलिए एक और स्केन दूसरी किताब वाला लगा रहा हुँ

📚Tafsir Ibn Kathir, Tafsir Sura Faatir (35 :13-14), Page Number 748

🔻🔻🔻



يُولِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۙ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِن قِطْمِيرٍ ﴿١٣﴾ إِن تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ ۚ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيرٍ ﴿١٤﴾

ترجمہ: رات کو دن میں اور دن کو رات میں داخل کرتا ہے آفتاب و ماہتاب کو اسی نے کام میں لگا دیا ہے ہر ایک میعاد معین پر چل رہا ہے۔ یہی ہے اللہ تعالیٰ تم سب کا پالنے والا اسی کی سلطنت ہے۔ جنہیں تم اس کے سوا پکار رہے ہو وہ تو کھجور کی گٹھلی کے چھلکے کے بھی مالک نہیں۔[۱۳] اگر تم انہیں پکارو تو وہ تمہاری پکار سنتے ہی نہیں اور اگر بالفرض سن بھی لیں تو قبول نہیں کر سکتے ہیں۔ بلکہ قیامت کے دن تمہارے اس شرک کا صاف انکار کر جائیں گے۔ تجھے کوئی بھی حق تعالیٰ جیسی خبردار خبریں نہ دے گا۔[۱۴]

دن اور رات کی تخلیق قدرتِ الٰہی کی نشانی ہے: [آیت:۱۳۔۱۴] اللہ تعالیٰ اپنی قدرت کاملہ کا بیان فرما رہا ہے کہ اس نے رات کو اندھیرے والی اور دن کو روشنی والا بنایا ہے۔ کبھی کی راتیں بڑی کبھی کے دن بڑے' کبھی دونوں یکساں۔ کبھی جاڑے ہیں کبھی گرمیاں ہیں۔ اسی نے سورج اور چاند کو اور ٹھہرے ہوئے اور چلتے پھرتے ستاروں کو مطیع کر رکھا ہے۔ مقدار معین پر اللہ تعالیٰ کی طرف سے مقرر شدہ چال پر چلتے رہتے ہیں۔ پوری قدرتوں والے اور کامل علم والے اللہ تعالیٰ نے یہ نظام قائم کر رکھا ہے جو برابر چل رہا ہے اور وقت مقررہ یعنی قیامت تک یونہی جاری رہے گا۔ جس اللہ تعالیٰ نے یہ سب کیا ہے وہی دراصل لائق عبادت ہے اور وہی سب کا

और उस (अल्लाह) के सिवा जिन को तुम पुकारते हो, वह कुदरत नहीं रखते तुम्हारी मदद की और न खुद अपनी मदद ही करने के क़ाबिल हैं। **(197)**

रुकुआत 11	(10) सूरह यूनुस यूनुस (अ)	आयात 109

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

और अगर अल्लाह तुझे पहुँचाए कोई नुक़्सान तो उस के सिवा कोई उस को हटाने वाला नहीं, और अगर वह तेरा भला चाहे तो कोई उस के फ़ज़्ल को रोकने वाला नहीं, वह पहुँचाता है उस को अपने बन्दों में से जिस को चाहता है, और वह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। **(107)**

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

और अल्लाह जानता है जो तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो। (19)

और वह जिन्हें पुकारते हैं अल्लाह के सिवा वह कुछ भी पैदा नहीं करते बल्कि वह खुद पैदा किए गए हैं। (20)

मुर्दे हैं, ज़िन्दा नहीं, (बेजान हैं), और वह नहीं जानते वह कब उठाए जाएंगे। (21)

चींटियाँ

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

पस अल्लाह पर भरोसा करो, बेशक तुम वाज़ेह हक़ पर हो। **(79)**

बेशक तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते, न बहरों को (अपनी) पुकार सुना सकते हो (खुसूसन) जब वह पीठ फेर कर मुड़ जाएं। **(80)**

रुकूआत 5 | (35) सूरह फ़ातिर | आयात 45

पैदा करने वाला

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

और बराबर नहीं ज़िन्दे और न मुर्दे , बेशक अल्लाह जिस को चाहता है सुना देता है, और तुम (उनको) सुनाने वाले नहीं जो क़बरों में हैं। **(22)**

रुकुआत 4 | (46) सूरतुल अहकाफ़ — रेगिस्तान | आयात 35

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

और उस से बड़ा गुमराह कौन है? जो अल्लाह के सिवा उस को पुकारता है जो उसे जवाब न देगा क़ियामत के दिन तक, और वह उन के पुकारने से (भी) बेख़बर हैं। (5)

रुकुआत 20 | (3) सूरह आले इमरान — (इमरान का घराना) | आयात 200

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अगर अल्लाह तुम्हारी मदद करे तो तुम पर कोई ग़ालिब आने वाला नहीं, और अगर वह तुम्हें छोड़ दे तो कौन है जो तुम्हारी मदद करे उस के बाद, और चाहिए कि ईमान वाले अल्लाह पर भरोसा करें। (160)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

और अगर अल्लाह तुम्हें सख़्ती पहुँचाए तो कोई दूर करने वाला नहीं उस को उस के सिवा, और अगर वह कोई भलाई पहुँचाए तुम्हें तो वह हर शै पर क़ादिर है। **(17)**

रुकूआत 11 | (10) सूरह यूनुस यूनुस (अ) | आयात 109

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

और वह अल्लाह के सिवा उन्हें पूजते हैं जो उन्हें न ज़रर पहुँचा सकें और न नफ़ा दे सकें, और वह कहते हैं यह सब अल्लाह के पास हमारे सिफ़ारशी हैं। आप (स) कह दें क्या तुम अल्लाह को उस की ख़बर देते हो जो वह नहीं जानता आस्मानों में और न ज़मीन में, वह पाक है और वह बालातर है उस से जो वह शिर्क करते हैं। **(18)**

रुकुआत 40 | (2) सूरतुल बक़रः (गाय) | आयात 286

क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह के लिए है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत, और तुम्हारे लिए नहीं अल्लाह के सिवा कोई हामी और न मददगार। **(107)**

रुकुआत 20 | (3) सूरह आले इमरान (इमरान का घराना) | आयात 200

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

आप कहें ऐ अल्लाह! मालिके मुल्क तू जिसे चाहे मुल्क दे, तू मुल्क छीन ले जिस से तू चाहे, और तू जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़लील कर दे, तेरे हाथ में तमाम भलाई है, बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है। **(26)**

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अब पीछे रह जाने वाले देहाती आप (स) से कहेंगे कि हमें हमारे मालों और हमारे घर वालों ने मशग़ूल रखा (रुख़सत न दी) सो आप (स) हमारे लिए बख़्शिश मांगिए, वह अपनी ज़बानों से वह कहते हैं जो उन के दिलों में नहीं, आप (स) फ़रमा दें तुम्हारे लिए अल्लाह के सामने कौन इख़्तियार रखता है किसी चीज़ का? अगर वह तुम्हें नुक़्सान (पहुँचाना) चाहे या तुम्हें नफ़ा (पहुँचाना) चाहे, बल्कि तुम जो कुछ करते हो, अल्लाह उस से ख़बरदार है। **(11)**

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अब पीछे रह जाने वाले देहाती आप (स) से कहेंगे कि हमें हमारे मालों और हमारे घर वालों ने मश्ग़ूल रखा (रुख़सत न दी) सो आप (स) हमारे लिए बख़्शिश मांगिए, वह अपनी ज़बानों से वह कहते हैं जो उन के दिलों में नहीं, आप (स) फ़रमा दें तुम्हारे लिए अल्लाह के सामने कौन इख़्तियार रखता है किसी चीज़ का? अगर वह तुम्हें नुक़्सान (पहुँचाना) चाहे या तुम्हें नफ़ा (पहुँचाना) चाहे, बल्कि तुम जो कुछ करते हो, अल्लाह उस से ख़बरदार है। **(11)**

रुकुआत 8 (20) सूरह ता हा आयात 135

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

इस के सिवा नहीं कि तुम्हारा माबूद अल्लाह है, वह जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस का इल्म हर शै पर मुहीत है। **(98)**

रुकुआत 10 (22) सूरतुल हज आयात 78

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ लोगो! एक मिसाल बयान की जाती है, पस उस को (कान खोल कर) सुनो, बेशक जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो वह हरगिज़ एक मक्खी (भी) न पैदा कर सकेंगे अगरचे उस के लिए वह सब जमा हो जाएं, और अगर मक्खी उन से कुछ छीन ले तो वह उस से न छुड़ा सकेंगे, (कितना) बोदा है चाहने वाला और जिस को चाहा (वह भी)। **(73)**

और जो लोग अल्लाह के सिवा शरीक अपनाते हैं वह उन से मुहब्बत करते हैं जैसे अल्लाह से मुहब्बत, और जो लोग ईमान लाए (उन्हें) अल्लाह की मुहब्बत सब से ज़ियादा है, और अगर देख लें जिन्हों ने ज़ुल्म किया (उस वक़्त को) जब यह अज़ाब देखेंगे कि तमाम कुव्वत अल्लाह के लिए है और यह कि अल्लाह का अज़ाब सख़्त है। **(165)**

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

और अगर आप (स) उन से पूछें कि आस्मानों और ज़मीन को किस ने पैदा क्या? तो वह ज़रूर कहेंगे "अल्लाह ने", आप (स) फ़रमा दें: पस क्या तुम ने देखा जिन को पुकारते हो अल्लाह के सिवा, अगर अल्लाह मेरे लिए कोई ज़र्र चाहे तो क्या वह सब उस का ज़र्र दूर कर सकती हैं? या वह मेरे लिए कोई रहमत चाहे तो क्या वह सब उस की रहमत रोक सकती हैं? आप (स) फ़रमा दें मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं। **(38)**

और रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है, और उस ने सूरज चाँद को मुसख़्ख़र किया, हर एक मुक़र्रर वक़्त तक चलता है, यही तुम्हारा परवरदिगार है, उसी के लिए बादशाहत, और जिन को तुम उस के सिवा पुकारते हो, वह खजूर की घुटली के छिलके (के भी) मालिक नहीं। **(13)**

और तुम उनको पुकारो तो वह नहीं सुनेंगे तुम्हारी पुकार, और अगर वह सुन भी लें तो तुम्हारी हाजत पूरी न कर सकेंगे, और वह रोज़े क़ियामत तुम्हारे शिर्क करने का इन्कार करेंगे, और तुझ को ख़बर देने वाले (अल्लाह) की मानिंद कोई ख़बर न देगा। **(14)**

का इन्कार करेंगे, और तुझ को ख़बर देने वाले (अल्लाह) की मानिंद कोई ख़बर न देगा। (14)

रुकुआत 40 | (2) सूरतुल बक़रः (गाय) | आयात 286

और जब मेरे बन्दे आप (स) से मेरे मुतअ़ल्लिक़ पूछें तो मैं क़रीब हूँ, मैं कुबूल करता हूँ पुकारने वाले की दुआ़ जब वह मुझ से मांगे, पस चाहिए कि वह मेरा हुक्म मानें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि वह हिदायत पाएं। (186)

✅ अन्त में कुछ मन की बात

☑अल्लाह तआला ने कुरआन को तमाम मुसलमानों को नसीहत और हिदायत के लिए नाजिल किया हैं।
अल्लाह कुरआन में फरमाता हैं
"ऐ लोगो! तुम्हारे रब की तरफ से एक ऐसी चीज (कुरआन) आई हैं जो नसीहत हैं और दिलो में जो (रोग) हैं उन के लिए शिफ़ा हैं, और हिदायत करने वाली हैं और रहमत हैं ईमान वालो के लिए"
"आप {ﷺ} कह दीजिये की बस लोगो को अल्लाह के फ़ज़्ल और रहमत पर खुश होना चाहिए,वह उस से कही ज्यादा बेहतर हैं जिसको वह जमा कर रहे हैं"
Yunus (10:57-58)

☑रसूलुल्लाह {ﷺ} ने फर्माया:-
أمَّا بَعْدُ فَإنَّ خَيْرَ الْحَدِيثِ كِتَابُ اللَّهِ وَخَيْرُ الْهُدَى هُدَى مُحَمَّدٍ وَشَرُّ الأُمُورِ مُحْدَثَاتُهَا وَكُلُّ بِدْعَةٍ ضَلاَلَةٌ
"अमा बाद,बेहतरीन चीज अल्लाह की किताब हैं और बेहतरीन तरीका मुहम्मद {ﷺ} का तरीका हैं। और बदतरीन काम नई ईजाद करदा काम (बिदअतें) हैं और हर बिदअत गुमराही हैं।"
Reference : Sahih Muslim 2005 (867)

〰इतना ग़ज़ब की आँख से न देख ऐ दोज़ख़,
बड़ा रहीम है वो , जिसका गुनाहगार हूँ मैं।
न कर मोहताज़ मुझे , किसी का इस ज़माने में ,
क्या कमी है या रब, तेरे इस ख़ज़ाने में।

〰अल्लाह तआला से दुआ हैं की,
अल्लाह हमारे इल्म में बढ़ोतरी पैदा कर दीजिये और हमें दीन-ए-हक़ इस्लाम की सही समझ अता कीजिए।
आमीन

अल्लाह मुझे,मेरे भाइयो,मेरे दोस्तों,मेरे रिश्तेदारो और मेरे संपर्क में आने वाले हर व्यक्ति को कुरआन और हदीस के रास्ते पर चलने की तौफीक अता फर्मा।
आमीन